बड़ा हाथी, नन्हा कछुआ

एक कछुआ था। छोटा-सा। नटखट-सा। कोई भी जानवर पानी में उतरता तो वह खूब शरारत करता। उन्हें गुदगुदी करता। हाथी को तो वह ज़्यादा ही चिढ़ाता।

एक दिन जब हाथी नहाने के लिए पानी में घुसा तो कछुआ तैरता हुआ आया और उसकी पीठ पर बैठ गया। हाथी नहाकर पानी के बाहर आ गया। उसकी पीठ पर बैठा कछुआ भी। हाथी उसे बैठाकर चल पड़ा।

रास्ते में एक तितली मिली। वह बोली, "हाथी दादा, इस शरारती कछुए को कहाँ लिए जा रहे हो?" हाथी चौंका। उसने पूछा, "कैसा कछुआ? कहाँ है कछुआ?" तितली बोली, "तुम्हारी पीठ पर कैसा अकड़कर बैठा है।" हाथी ने गुस्से में आकर कछुए को अपनी सूँड में पकड़ लिया। कछुए ने कहा, "हाथी दादा, मैं तो भूल से तम्हारी पीठ पर चढ़ गया था। सोचा कोई ऊँची चट्टान है।"

हाथी बोला, "तू बड़ा पाजी है। जब भी पानी पीने जाता हूँ, मुझसे शरारत करता है। चल, मैं तुझे अपनी पीठ से भी ऊँची जगह पर बिठाता हूँ।"

कछुए ने पूछा, "कहाँ?"

"उस बरगद के पेड़ पर। उसकी सबसे ऊँची डाल पर। तुम्हारी यही सज़ा है।"

कछुआ बहुत घबराया। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने कहा, "मैं बरगद की डाल पर बैठने से नहीं डरता। मैं खूब झूला झूलूँगा। कोयल से गाना सुनूँगा। कबूतर से कहानी, कौए से खूब बातें करूँगा। उसकी ऊँची डाल पर मुझे बड़ा मज़ा आएगा।"

हाथी ने पूछा, "तू बड़े से बड़े पेड़ पर बैठने से नहीं डरता?"

"बिलकुल नहीं," कछुए ने सीना तानकर कहा, "मगर एक आम के पेड़ से ज़रूर डरता हूँ।"

"बताओ, बताओ, बताओ।" हाथी ने उतावली से पूछा।

"उस नदी किनारे वाले आम के पेड़ से, जिसकी लम्बी टेढ़ी डाल नदी में झुकी हुई है। ओह! वह डाल कितनी मोटी है। देखकर ही डर लगता है। लगता है बैठते ही गिर पड़ूँगा। बस उस पेड़ पर मुझे मत बिठाना।" कछुआ बोला।

हाथी ज़ोर से हँस पड़ा। अपने बड़े-बड़े कान हिलाता बोला, "अब मैं तुझे उसी पर बिठाऊँगा।" कछुआ चुप रहा। हाथी ने जैसे ही पानी में झुकी हुई आम की डाल पर कछुए को बिठाया, वह पानी में कूद गया।

फिर कछुए ने पानी से अपनी गर्दन निकालकर हँसते हुए कहा, "हाथी दादा, धन्यवाद!"

यह कहकर उसने झट से अपनी गर्दन पानी में छिपा ली।

—अमर गोस्वामी

चित्र: कनक